कामधेनु आसव

मृत्युलोक में कामधेनु मानव की हर कामना की पूर्ति करने के लिए गोलोक से आयी है. वर्तमान में दमा की बीमारी में कामधेनु का वरदान कामधेनु आसव मानव के लिए बहुत ही प्रभावशाली तथा चमत्कारिक परिणाम देने वाला है.

अनुसंधान

दीनदयाल उपाध्याय पशु विश्वविद्यालय मथुरा में किये गये प्रयोगशाला परीक्षण में गोमूत्र में प्रोटीन 0.1037 ग्राम प्रति लीटर, यूरिक अम्ल 135 मिलीग्राम प्रति लीटर, यूरिया 5.5418 मिलीमोल प्रतिलीटर, क्रियाटिनिन 0.6670 ग्राम प्रति लीटर, लेक्टेट 3.7830 मिलीमोल प्रति लीटर, विटामिन सी 216.408 मिलीग्राम प्रति लीटर, विटामिन बी-1 444125 माइक्रोग्राम प्रति लीटर, विटामिन बी-2 0. 6336 मिलीग्राम प्रतिलीटर, कैल्शियम 5.735 मिलीमोल प्रति लीटर, फास्फोरस 0.4805 मिलीमोल प्रति लीटर, पाचक रसों में लेक्टेट डिहाइड्रोजेनेज 21.780 यूनिट प्रति लीटर, अल्कलाइन फास्फेटेज 110.110 के.ए. यूनिट, अम्लीय फास्फेटेज 456.620 के.ए. यूनिट, फिनोल 4.75 मिलीग्राम प्रति 100 मिलीलीटर है.

सोडियम

सोडियम मानव शरीर के लिये अनिवार्य है. सोडियम मानव जीवन के लिये बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है. सोडियम के कारण रक्त पूरी तरह से साफ रहता है. सोडियम के कारण शरीर में नाडी विकार नहीं होता है.

सोडियम भोजन को पचाने में सहायक होता है. शरीर में अन्य खनिजों को शरीरोपयोगी बनाने तथा उनका सात्म्य करने के लिये सोडियम बहुत महत्वपूर्ण है. सोडियम के कारण पसीने में खनिज पाया जाता है.

हमारे शरीर में पोटेशियम बहुत ही महत्वपूर्ण खनिज है. एक स्वस्थ व्यक्ति के शरीर में 250 ग्राम पोटेशियम मौजूद रहता है. जितना पोटेशियम हमें दैनिक आहार में मिलता है लगभग उतना पोटेशियम मलमूत्र के माध्यम से बाहर निकलता है.

आवश्यकता पड़ने पर गुर्दे पोटेशियम की थोड़ी मात्रा भी मूत्र के साथ उत्सर्जित कर देते हैं. पोटेशियम धन आयन के रुप में मौजूद रहता है. पोटेशियम कोशिकाओं में पाया जाता है. पोटेशियम प्रमुख अन्तःकोशिकीय धनायन है और सक्रिय कोशिकीय संरचना इसकी आंतरिक और बाहय कोशिकीय सांद्रता को स्थिर बनाये रखती है. शरीर में पोटेशियम का प्रमुख कार्य कोशिकाओं के आयतन तथा उनके रसाक-र्ण दाब को स्थिर बनाये रखता है. पोटेशियम शरीर अम्लीय-क्षारीय संतुलन को प्रभावित करता है. साथ ही अनेक उपापचयी प्रक्रियाओं में योग देता है. अंतः तथा बाहय कोशिकीय पोटेशियम आयनों का पारम्परिक अनुपात ही उत्तेजनीय उतकों के झिल्ली-विभव को निर्धारित करता है. कुछ बीमारियों में पोटेशियम के भंडार में कमी आ जाती है. अतिसार और वमन शरीर में सोडियम की कमी एवं जलाभाव के साथ पोटेशियम अभाव की स्थिति उत्पन्न होती है. अभिवृक्क प्रतिरक्षा पसीने के स्त्राव में हुई वृद्धि भी पोटेशियम अभाव पैदा कर सकती है क्योंकि ये हार्मोन गुर्दो के पोटेशियम स्त्राव दर में वृद्धि करते हैं. उतकों के न-ट होने के कारण भी शरीर को पोटेशियम के अभाव का सामना कर पड़ सकता है. पोटेशियम मांसपेशिओं को काम करने में सहायता करता है. पोटेशियम की कमी से आंतों की पेशियों में विकार उत्पन्न हो सकता है. जब किसी वजह से शरीर का कोई उतक न-ट हो जाता है तो उस उतक की कोशिकाओं का पोटेशियम मूत्र के साथ उत्सर्जित होने लगता है. एक ग्राम कोशिकीय प्रोटीन के न-ट होने पर लगभग 3 मिलीग्राम पोटेशियम मुक्त होता है. रक्त में मौजूद हाइड्रोजन आयनों की सांद्रता में कमी तथा गुर्दजन्य सोडियम आयनों की कमी भी पोटेशियम अभाव पैदा कर सकती है. ऐसा भी हो सकता है कि शरीर में मौजूद कुल पोटेशियम की मात्रा में कमी न आये पर शरीर में पोटेशियम अभाव के लक्षण स्प-ट होने लगे. यह सब उस समय होने लगता है जब बाहय कोशिकीय प्रभाग का पोटेशयम आंतरिक कोशिकीय प्रभाग में सीानातरिक होने लगता है. जब शरीर में पोटेशियम का अभाव होता है तो यह जरुरी नहीं है कि उसका प्रभाव रक्तप्लाज्मा के पोटेशियम स्तर पर भी पड़े. दरअसल रक्तप्लाज्मा तथा

कोशिकीय पोटेशियम के बीच काफी जटल संतुलन रहता है जो अनेक कारणों से प्रभावित हो सकता है. इनमें से एक प्रमुख कारण है रक्त के अम्लीय-क्षारीय संतुलन में गड़बड़ी. अम्ल-रक्तता पोटेशियम को कोशिकाओं से बाहर निकालती है पर खार रक्तता बाहय कोशिकीय पोटेशियम को अन्तः कोशिकीय प्रभाग में भेजती है. अत्यधिक पोटेशियम अभाव हो जाने पर शरीर के अन्तः व बाहय कोशिकीय दोनों ही प्रभागों में पोटेशियम की सांद्रता कम हो जाती है. यद्यपि किसी भी प्रभाग में हुए पोटेशियम हास के कारण शरीर में पोटेशियम अभाव के लक्षण दिखाई देने लगते हैं किंतु दोनों ही प्रभाग में एक साथ होने वाली पोटेशियम अभाव की स्थिति से संबंधित लक्षण शीघ्रता से प्रकट होने लगते हैं. पोटेशियम अभाव से पीड़ित व्यक्ति संभ्रांति का शिकार हो जाता है. वह उदासीनता एवं घबराहट का शिकार होकर मूर्च्छा की स्थिति में भी पहुंच सकता है परन्तु उपचार के बाद स्वस्थ होने पर रोगी को यह सब कुछ याद नहीं रहता.

पोटेशियम के अभाव से पेशियों में कमजोरी आ जाती है. कंकाल पेशियों पर इसका सबसे अधिक प्रभाव पड़ता है. आमाशय की पेशियों में आई कमजोरी के कारण छोटी आंत में अवरोध की स्थिति पैदा हो सकती है.

हृदय पेशी में उत्पन्न दुर्बलता, हृदय को विस्तारित करती है और फलस्वरुप रक्तचाप गिरने लगता है. ऐसी स्थिति के लंबे समय तक बने रहने पर हृदय अपना काम करना बंद भी कर सकता है. श्वसन पेशियों में आई कमजोरी के कारण श्वसन केंद्र नि-क्रीय हो सकता है और फलस्वरुप व्यक्ति मौत का शिकार बन सकता है. पोटेशियम अभाव की स्थिति में गुर्दे मूत्र में पोटेशियम की सांद्रता बढ़ाने या घटाने में अक्षम हो जाते हैं. मूत्रतारोधी के हार्मोन भी गुर्दो की क्रियाशीलता को प्रभावित नहीं करते हैं. पोटेशियम अभाव से पीड़ित व्यक्ति को बार बार मूत्र त्यागना पड़ता है. अत्यधिक मूत्र निकलने के कारण शरीर में जलाभाव की स्थिति भी उत्पन्न हो जाती है और पीड़ित व्यक्ति को बार बार प्यास लगने लगती है. पोटेशियम अभाव से ग्रस्त व्यक्ति के शरीर में हाइड्रोजन आयन के अभाव की स्थिति उत्पन्न हो जाती है. पोटेशियम आधिक्य की स्थिति जिसमें पोटेशियम आयनों की अधिकता होती है शरीर के लिये घातक है. जब शरीर अपनी आवश्यकता से अधिक पोटेशियम को बाहर निकाल नहीं पाता है तब शरीर में पोटेशियम की मात्रा बढ़ने लगती है. पोटेशियम आधिक्य गुर्दे के विकार उत्पन्न हो जाने के कारण तथा रक्त में पोटेशियम की मात्रा एकाएक अधिक मात्रा पहुंचने के कारण होता है. कभी कभी कोशिकीय पोटेशियम के अचानक मुक्त होने के कारण पोटेशियम आधिक्य की स्थिति उत्पन्न होती है. पोटेशियम आधिक्य से हृदयपेशी पर अवर्तमन प्रभाव पड़ता है. फलस्वरुप हृदय धड़कने की दर कम और असामान्य हो जाती है. सीरम में पोटेशियम की सांद्रता प्रतिलीटर में सात मिलीलीटर अधिक हो जाती है तो हृदय गत्यावरोध हो जाता है.

रक्त में पोटेशियम की सांद्रता को ज्वाला ज्योतिर्मापी की सहायता से आसानी से मापी जाती है. मनु-य के रक्त में सामान्यतः 3.5 से 5.5 मिली मोल पोटेशियम प्रतिलीटर होता है. पोटेशियम के आधिक्य अथवा अभाव की जानकारी इ.सी.जी. में हुए परिवर्तन से भी प्राप्त की जा सकी है. मुंह से कुछ ऐसे पदार्थ दिये जाते हैं जो आमाशय तथा छोटी आंत में पहुंचकर पोटेशियम का अधिशो-ण कर सकें. ग्लूकोज तथा इंसुलिन भी पोटेशियम आधिक्य को कम करने में सक्षम हैं. ये पोटेशियम को बाहय कोशिकीय प्रभग से अतःकोशिकीय प्रभाग में जाने के लिये प्रेरित करते हैं. पोटेशियम की कमी के कारण अपच, मंदाग्नि, कब्ज, वायु विकार उत्पन्न होते हैं. पोटेशियम शरीर के प्राकृतिक विकास के लिये बहुत ही अधिक आवश्यक है क्योंकि पोटेशियम के कारण पाचन बहुत ही सही ढंग से होता है और भूख बहुत ही तेज लगती है. गर्भ में पल रहे बच्चे को संपूर्ण विकास के लिये पोटेशियम की आवश्यकता 5 माह के बाद पड़ती है इसलिये गर्भवती महिला को गाय माता के दूध एवं छाछ का सेवन प्रतिदिन अवश्य करना चाहिये. एक व्यक्ति को 140 मिलीग्राम पोटेशियम की आवश्यकता होती है.

परहेज तथा सावधानी

पेट साफ

सांस के मरीज का पेट हमेशा साफ रहना चाहिए. पेट साफ रखने के लिए देर से पचने वाली वस्तुएं नहीं खानी चाहिए. पाचन के विचार से मैदे से बनी वस्तुएं

बहुत ही नुकसानदायी हैं.

मेदा

मैदे से बनने वाली वस्तुओं में केक, नान खटाई, पेस्ट्री, क्रीम रोल, बिस्कुट, ब्रेड, पीजा, समोसा, कचौड़ी, खस्ता, कोलड्रिंग नहीं सेवन करना है. मैदे से बनी हुई वस्तुएं पेट में चिपक जाती हैं. तली हुई वस्तुएं जहर के समान है.

तली वस्तुएं

तली हुई वस्तुएं पाचन के लिए अच्छी नहीं हैं. उड़द की चीजें नहीं खानी चाहिए. मदिरा, सिगरेट आदि नशे वाली वस्तुएं नहीं खानी पीनी चाहिए. कंद भी देर से पचते हैं. गैस करने वाली सब्जी, दालें नहीं खानी चाहिए. भैंस के दूध तथा भैंस के दूध से बनी वस्तुएं सेवन नहीं करनी चाहिए. अधिक वसा रहने के कारण भैंस का दूध बहुत नुकसान करता है. चाय पीना बंद करना आवश्यक है. चाय में दूध डालने पर थीन नाम का जहर उत्पन्न करता है. एक कोफी में 21 चाय के बराबर जहर है इसलिए कोफी नहीं पीनी चाहिए.

प्रमुख कारण

जिस प्रकार देह को गतिमान रहने के लिये आहार की आवश्यकता होती है उसी प्रकार प्राणवायु की आवश्यकता होती है. जिस समय दोनों नथुनों से सांस भरते हैं उस समय वह सांस हमारे फेफड़े के लाखों वायुकोषों में पहुंचती है जहां एक तरफ हवा तथा दूसरी तरफ खून होता है.

इन्ही वायु कोषों में खून, कार्बोलिक अम्ल के रूप में, कार्बन डाई ओक्साइड लेकर पहुंचता है जो सांस या प्रश्वास द्वारा बाहर फेक दिया जाता है.

कार्बन डाई ओक्साइड से मुक्त होकर खून ओक्सीजन से जुड़कर संयुक्त हो जाता है.

इस प्रकार ओक्सीजन को ग्रहण कर खून फेफड़ों से दिल में पहुंचता है. दिल की पंपिग क्रिया द्वारा सारे शरीर में पहुंचा दिया जाता है.

ओक्सीजनयुक्त खून धमनियों के द्वारा सारे शरीर में तथा शिराओं द्वारा डिओक्सीजेनेटेड खून दिल से फेफडों में पंप किया जाता है जहां सांस प्रश्वास प्रक्रिया द्वारा शुद्धीकरण होता रहता है.

हमारे देह में सांस लेने का एक तंत्र है जिसमें फेफड़े एक आवश्यक अंग हैं.

मुख्य कार्य

फेफड़े का मुख्य कार्य बाहय वातावरण से आक्सीजन प्राप्त करना तथा देह की कोशिकाओं को रक्त के माध्यम से उपलब्ध कराना तथा इन कोशिकाओं की गतिविधियों से उत्पन्न होने वाली कार्बन डाई ओक्साइड नामक हानिकारक गैस को बाहर निकालना है.

संरचना

हमारी छाती में दो फेफड़े होते हैं. दायां और बायां. श्वासनली के विभाजन के बाद फेफड़े ब्रांकस से जुड़े हुए होते हैं. फेफड़ों का आकार अर्थ त्रिकोण जैसा होता है.

मुख्यतया दाहिना फेफड़ा तीन तथा बायां फेफड़ा दो भागों में विभक्त होता है. ये चिकने और कोमल होते हैं. उनके भीतर अनेक को-ठ होते हैं जिनको वायु को-ठ कहते हैं. इन को-ठों में वायु भरी रहती है.

प्रत्येक फेफड़े को एक झिल्ली घेरे रहती है ताकि फूलते और सिकुड़ते समय बिना किसी रगड़ के कार्य कर सके. फेफड़ों के उपर दो पतली सी झिल्लियों का आवरण लगा होता है.

एक झिल्ली फेफड़े के उपर उसे आवृत किये हुए होती है तो दूसरी उसके उपर होती है. ये झिल्लियां फेफड़ों को पसलियों और मांसपेशियों से अलग किये हुए होती हैं.

ये झिल्लियां एक तो फेफड़ों को नम रखती हैं और दूसरे ये इनकी बाहरी आघात से किसी सीमा तक रक्षा भी करती है.

फेफड़ों के अंदर ब्रांकस की शाखायें फैल जाया करती हैं और फेफड़ों में जाकर खुलती हैं.

फेफड़ों में दो प्रकार से रक्त प्रवाह होता है. एक रक्तवाहिनियां उनमें वह रक्त लाती हैं जो कि फेफड़े साफ करते हैं और दूसरी रक्तवाहिनियां अन्य स्थानों पर वहां से रक्त संचार करती हैं.

इस झिल्ली में विकार उत्पन्न होने पर इसमें सूजन उत्पन्न हो जाती है तो उसे प्लूरिसी रोग कहते हैं.

जब फेफड़े में सूजन हो जाती है तब इसे

श्वसनिका सूजन कहते हैं जो आगे चलकर दमा में परिवर्तित हो जाता है.

सांस की बीमारी के प्रमुख कारणों में धूल-धुएं युक्त वातावरण में निवास करना है.

आधुनिक विकृति विज्ञान

आधुनिक विकृति विज्ञान की दृष्टि से श्वास प्रणालिकाओं की म्यूकस मेमब्रेन में इनफलेमेशन हो जाने से वायु पथ संकीर्ण हो जाता है तथा प्राणदा नाडी सूत्रों के उत्तेजित होने के कारण श्वास प्रणालिकीय पेशियां संकुचित हो जाती हैं जिससे वायु का मार्ग अवरुद्ध हो जाता है तथा श्वास में कष्ट उत्पन्न हो जाता है.

लक्षण

सांस फूलने लगती है. सांस फूलने के कारण बहुत ही कमजोर हो जाता है. छाती में सांय सांय की आवाज होती है. आवाज साफ नहीं आती है. आंखों के आगे अंधेरा सा छा जाता है. लेटने में तकलीफ होती है.

सांस छोड़ने में तकलीफ होती है. झुककर बैठने में राहत मिलती है. छाती में जकड़न एवं भारीपन लगता है. सूखी या बलगमयुक्त खांसी होने लगती है.

कार्यप्रणाली

गोमूत्र आसव कफ को पतलाकर नाक, मुंह एवं मल में पूरी तरह से निकाल देता है. कफ निकल जाने के बाद में मरीज को बहुत ही आराम अनुभव होने लगता है. सांस लेने में आसानी हो जाती है. गोमूत्र आसव नया कफ नहीं बनने देता है.

50 मिलीलीटर

गोमूत्र आसव हमेशा व्यस्क व्यक्ति को 50 मिलीलीटर तक भोजन के बाद में ग्रहण करना चाहिए. बालक को 25 मिलीलीटर ही ग्रहण करना चाहिए.

गोमूत्र की उर्जा का लाभ मरीज को मिलता है. गोमूत्र आसव मधुमेह होने पर नहीं देना चाहिए. आसव के सेवन के समय में परहेज करने पर सांस के मरीज को ज्यादा लाभ होता है.

परहेज

परहेज में भैंस के दूध तथा दूध से बने पदार्थ का उपयोग नहीं करना है. विश्व में वर्तमान में दमा के मरीज करोड़ों की संख्या में है.

वृद्धि

आने वाले समय में दमा के मरीजों की संख्या बहुत अधिक बढ़ जायेगी. ऐसी मान्यता हे कि दमा के मरीज दम निकलने के बाद ही ठीक होते हैं.

औ-धि गुण

सुश्रुत संहिता, चरक संहिता, भावप्रकाश, रानिघुंट, अमृतसागर, आरोग्य ज्ञानको-ा, द्रव्यगुण शास्त्र, हिंदुस्तान का वैद्यराज, बृहद वाग्भटट, अ-टांग संग्रह आर्यभि-ोक आदि आयुर्वेद ग्रंथों में गोमूत्र के औ-धिय गुणों के बारे में वर्णन है.

कामधेनु चिकित्सा पद्धति

कामधेनु चिकित्सा पद्धति भारत के ऋषि-यों ने विश्व को दी है. ऋषि-यों ने अपना जीवन कामधेनु चिकित्सा पद्धति से निरोगी तथा दीर्धायु रखा है.

विश्व भारत के ऋषि-यों के दिव्य एवं अलौकिक जीवन शैली से चकित होकर कामधेनु चिकित्सा पद्धति की ओर आकर्षित हुआ है.

परख

विश्व ने कामधेनु चिकित्सा पद्धति को हर तरह से परखा तथा विश्व आज भारत की दी गयी चिकित्सा पद्धति को अब पूरी तरह से अपना चुका है.

ओल्ड इज गोल्ड

आसव जितना पुराना होगा उतना अच्छा परिणाम देगा. आसव बनाने के लिए जितना पुराना गुड़ मिल जाये तो आसव प्रभावशाली है.

आने वाले 100 सालों में मानव की सोच में बहुत ही तेजी के साथ में परिवर्तन होंगे.

प्रथम स्तर

प्रथम स्तर पर हर गांव में युवा को सम्मानजनक स्वरोजगार प्राप्त करने के लिए अपने आसपास में मित्रों परिचितों तथा रिश्तेदारों को नमूने के लिए प्रयोग करने के लिए देने के लिए सक्रिय होना चाहिए.

निर्यात

विश्व में निरन्तर अनुसंधानों के कारण ही मानव की सोच में बहुत ही तेजी के साथ में परिवर्तन हो रहे हैं. कामधेनु आसव में किसी प्रकार का साइड इफेक्ट नहीं है इसलिए आने वाले समय में विश्व में सिर्फ कामधेनु आसव की ही मांग रहेगी.

अदभुत परिणाम

कामधेनु आसव के दमा रोग में परिणाम अदभुत तथा चौकाने वाले हैं. दमा का मरीज बहुत ही कम समय में आवश्यक परहेज कर पूरी तरह से स्वस्थ हो रहा है.

कामधेनु आसव का मूल्य निर्यात करने पर बहुत अच्छा मिल रहा है. नमूने के रुप में सभी वैज्ञानिक परीक्षण करवा लेने पर विश्व से आर्डर मिलेगा.

वैचूर

भारत में वैचूर प्रजाति की गायें केरल में मौजूद हैं जो कद में मात्र 91 सेंटीमीटर होने के कारण सबसे कम खाकर मात्र 1 किलो पूरी तरह से निरोगी तथा अदभुत गुणों के साथ में विश्व में प्रसिद्ध हैं. वर्तमान में केरल में मात्र 137 बच गयी हैं.

वैचूर के मूत्र से कामधेनु आसव तैयार करने पर बहुत ही दिव्य परिणाम मिलेंगे.

आयुर्वेदिक आसव पहले से ही भारत से बहुत अच्छे मूल्य पर निर्यात किये जा रहे हैं.

100 रु.

भारत में भी काली बछिया के मूत्र से तैयार कामधेनु आसव का 180 मिलीलीटर की शीशी का मूल्य गुणवत्ता के कारण ही 100 रु. तक है.

जैविक

विश्व में जैविक की विशे-ा मांग को ध्यान रखकर कामधेनु आसव के निर्यात करने के लिए युवा को विशे-ा रुप से तैयारियां करनी हैं.

कामधेनु आसव गोबर गैस पर ही तैयार करने पर गुणवत्ता अच्छी मिल रही है.

कामधेनु आसव के निर्माण के पूर्व आवश्यक जांच करने के लिए आधुनिक सुविधाओं के साथ में अनुसंधान केंद्र की आवश्यकता है.

सावधानी

कामधेनु आसव पुराना करने के लिए पूर्व तैयारियां करनी आवश्यक हैं. पुराना गुड़ पता होना आवश्यक है.

गोवंश पूरी तरह से स्वस्थ होना चाहिए. गोवंश यदि काले रंग का है तो सूर्य के सभी रंगों को ग्रहण करता है तथा मूत्र में अधिक उर्जा मौजूद रहती है.

बैंगनी

जड़ीबूटी खाने वाली गायों के मूत्र में अदभुत उर्जा होती है. मूत्र का रंग गाढ़ा बैंगनी होता है. देखने में काला दिखता है.

अमरकंटक

मध्यप्रदेश में अमरकंटक पेंडारोड के पास में है. अमरकंटक में विश्व की सबसे अधिक जड़ीबूटियां मौजूद हैं. अमरकंटक अमर होने का स्थान है.

काली बछिया के मूत्र में दिव्य गुण मौजूद हैं. प्रातःकाल के समय में बहुत ही कम मात्रा में काली बछिया का मूत्र एकत्र होता है. सावधानी के साथ में सामने रहकर ही गुणवत्ता संभव है.

जैविक चारा खाने तथा जल ग्रहण करने वाली गायों का ही मूत्र आसव बनाने के लिए उपयोग करना है.

बहुत ही सावधानी के साथ में उच्च गुणवत्ता के साथ में कामधेनु आसव तैयार करने के लिए गोशालाओं में निःशुल्क प्रशिक्षण प्राप्त कर बहुत ही कम लागत में तथा बिक्री बहुत अच्छे मूल्य पर होने के कारण युवा को प्रचार प्रसार करने के लिए पत्रक तैयार कर वितरित करना चाहिए.

युवा को काली बछिया का गोमूत्र अधिकतम मूल्य पर खरीदकर अपने निवास पर ही कामधेनु आसव कम से कम प्रतिमाह 100 लीटर तक तैयार करना चाहिए.

द्वितीय स्तर

विश्व हिंदु परि-ाद

डा. प्रवीण तोगड़िया जी के द्वारा विश्व हिंदु परि-ाद के द्वारा गो ब्रांड प्रोडक्ट में महानगरों में मेडिकल की दुकानों में गोशालाओं की 50 से अधिक वस्तुएं बिक्री की जा रही हैं.

गो ब्रांड प्रोडक्ट 200 गोशालाओं से कामधेनु आसव खरीद रहा है.

अखिल विश्व गायत्री परिवार

अखिल विश्व गायत्री परिवार गोशालाओं से खरीदकर कामधेनु आसव की बिक्री करने के करने के लिए सबसे अधिक सक्रिय है.

स्वामी रामदेवजी

स्वामी रामदेवजी वर्तमान में स्वदेशी वस्तुएं हर गांव में पहुंचा रहे हैं. निःशुल्क योग शिक्षक कामधेनु आसव के वितरण में भरपूर सहयोग कर रहे हैं.

भारत में आधुनिकतम सुविधाओं के साथ में अनुसंधान केंद्र तैयार कर बहुत ही छोटी गोशालाओं में गोवंश को पूरी तरह से स्वावलंबी बनाने के लिए उच्च गुणवत्ता को ध्यान में रखकर ही कम से कम प्रतिमाह 1000 लीटर तक कामधेनु आसव तैयार करना चाहिए.

तृतीय स्तर

पंचगव्य डिप्लोमा

श्री निरंजन वर्मा जी चेन्नई में 1 साल तक पंचगव्य डिप्लोमा का प्रशिक्षण युवाओं को दे रहे हैं. एक साल का डिप्लोमा लेने के बाद में युवा को प्रतिमाह 30,000 रु. प्राप्त होते हैं.

निर्यात को ध्यान में रखकर गोवंश को स्वावलंबी बनाने के लिए युवा वर्तमान में उच्च गुणवत्ता वाले कामधेनु आसव के निर्माण तथा इंटरनेट के माध्यम से मार्केटिंग करने के लिए सक्रिय हैं.

अनुसंधान केंद्र

भारत में बहुत अधिक मध्यम गोशालायें हैं. आधुनिक सुविधाओं के साथ में अनुसंधान केंद्र की आवश्यकता है.

मध्यम गोशालाओं में कम से कम प्रतिमाह 10,000 लीटर कामधेनु आसव तैयार करना चाहिए.

चतुर्थ स्तर

वर्तमान में भारत में गोवंश को पूरी तरह से स्वावलंबी बनाने के लिए भारतीय जीवजंतु कल्याण बोर्ड, कपार्ट, गो सेवा आयोग के वित्तीय सहयोग से युवाओं को कामधेनु आसव बनाने के निःशुल्क प्रशिक्षण की सुविधा बड़ी गोशालाओं में साल भर मौजूद है.

बड़ी गोशालाओं में कम से कम प्रतिमाह 50,000 लीटर कामधेनु आसव तैयार करना चाहिए.

पंचम स्तर

महानगर में युवाओं को निर्यातकों से संपर्क कर संभावनाओं का पता लगाना चाहिए. आर्यवैद्यशाला कोटटकल केरल 500 से अधिक महो-धियां 110 सालों से निर्यात कर रही हैं.

निर्यात करने के लिए प्रतिमाह कम से कम एक लाख लीटर कामधेनु आसव तैयार करना चाहिए.

अधिक जानकारी के लिए श्रीमती कमला आशर, अखिल विश्व कामधेनु परिवार, 21 सी, जयराज कोम्प्लेक्स, सोनी नी चाल, ओढव मार्ग, अहमदाबाद 382415 मोबाइल 9662407242 पर संपर्क करें.